''मीठे बच्चे – यह संगमयुग है चढ़ती कला का युग, इसमें सभी का भला होता है इसलिए कहा जाता चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला''

प्रश्नः- बाबा सभी ब्राह्मण बच्चों को बहुत-बहुत बधाइयाँ देते हैं – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि बाबा कहते तुम मेरे बच्चे मनुष्य से देवता बनते हो। तुम अभी रावण की जंजीरों से छूटते हो, तुम स्वर्ग की राजाई पाते हो, पास विद् ऑनर बनते हो, मैं नहीं इसलिए बाबा तुम्हें बहुत-बहुत बधाइयाँ देते हैं। तुम आत्मायें पतंग हो, तुम्हारी डोर मेरे हाथ में हैं। मैं तुम्हें स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ।

गीतः- आखिर वह दिन आया आज...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) पास विद् ऑनर होने के लिए एक बाप को याद करना है, किसी भी देहधारी को नहीं। इन आँखों से जो दिखाई देता है, उसे देखते भी नहीं देखना है।

2) हम अमरलोक की यात्रा पर जा रहे हैं इसलिए मृत्युलोक का कुछ भी याद न रहे, इन कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म न हो, यह ध्यान रखना है।

वरदानः- अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा शिक्षा देने वाले शिक्षा सम्पन्न योग्य शिक्षक भव

योग्य शिक्षक उसे कहा जाता है जो अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा शिक्षा दे। उनका स्वरूप ही शिक्षा सम्पन्न होगा। उनका देखना-चलना भी किसको शिक्षा देगा। जैसे साकार रूप में कदम-कदम हर कर्म शिक्षक के रूप में प्रैक्टिकल में देखा, जिसको दूसरे शब्दों में चरित्र कहते हैं। किसी को वाणी द्वारा शिक्षा देना तो कॉमन बात है लेकिन सभी अनुभव चाहते हैं। तो अपने श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से अनुभव कराओ।

स्लोगनः- संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिए आत्म शक्ति की उड़ान भरते चलो।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

संगठन को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए वाणी की शक्ति पर विशेष ध्यान दो। वाणी सदा निर्मल हो, कम बोलो, धीरे बोलो और मीठा बोलो। सम्मानजनक बोल ही बोलो। अभी तक साधारण बोल ज्यादा हैं। 'अलौकिक बोल हों, फरिश्तों के बोल हों', हर बोल मधुर हो। अभी इस बात पर अन्डरलाइन करो तब प्रत्यक्षता होगी।

''मीठे बच्चे – तुमने अपनी जीवन डोर एक बाप से बांधी है, तुम्हारा कनेक्शन एक से है, एक से ही तोड़ निभाना है''

प्रश्नः- संगमयुग पर आत्मा अपनी डोर परमात्मा के साथ जोड़ती है, इसकी रस्म अज्ञान में किस रीति से चलती आ रही है?

उत्तरः- शादी के समय स्त्री का पल्लव पति के साथ बांधते हैं। स्त्री समझती है जीवन भर उनका ही साथी होकर रहना है। तुमने तो अब अपना पल्लव बाप के साथ जोड़ा है। तुम जानते हो हमारी परवरिश आधाकल्प के लिए बाप द्वारा होगी।

गीतः- जीवन डोर तुम्हीं संग बांधी...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) अपने बुद्धि की रुहानी डोर एक बाप के साथ बांधनी है। एक की ही श्रीमत पर चलना है।

2) हम मोस्ट स्वीटेस्ट झाड़ का कलम लगा रहे हैं इसलिए पहले स्वयं को बहुत-बहुत स्वीट बनाना है। याद की यात्रा में तत्पर रह विकर्म विनाश करने हैं।

वरदानः- मनन शक्ति द्वारा हर प्वाइंट के अनुभवी बनने वाले सदा शक्तिशाली मायाप्रूफ, विघ्नप्रूफ भव

जैसे शरीर की शक्ति के लिए पाचन शक्ति वा हजम करने की शक्ति आवश्यक है ऐसे आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए मनन शक्ति चाहिए। मनन शक्ति द्वारा अनुभव स्वरूप हो जाना – यही सबसे बड़े से बड़ी शक्ति है। ऐसे अनुभवी कभी धोखा नहीं खा सकते, सुनी सुनाई बातों में विचलित नहीं हो सकते। अनुभवी सदा सम्पन्न रहते हैं। वह सदा शक्तिशाली, मायाप्रूफ, विघ्न प्रूफ बन जाते हैं।

स्लोगनः- खुशी का खजाना सदा साथ रहे तो बाकी सब खजाने स्वतः आ जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

सफलता सम्पन्न बनने के लिए – साधारण कार्य में रहते हुए भी फरिश्ते की चाल और हाल हो। ऐसे नहीं कहो कि क्या करें बात ही ऐसी थी, काम ही ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी इसलिए साधारणता आ गई। किसी समय भी, किसी हालत में भी आपका अलौकिक स्वरूप हर एक को अनुभव हो। जैसी बात वैसा अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बातें आपको बदल न दें तब सबके समीप आयेंगे और एकता का संगठन मजबूत होगा।

''मीठे बच्चे – तुम ब्राह्मण सो देवता बनते हो, तुम्हीं भारत को स्वर्ग बनाते हो, तो तुम्हें अपनी ब्राह्मण जाति का नशा चाहिए''

प्रश्नः- सच्चे ब्राह्मणों की मुख्य निशानियाँ क्या होंगी?

उत्तरः- सच्चे ब्राह्मणों का इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ होगा। वह जैसे इस दुनिया का किनारा छोड़ चुके। 2. सच्चे ब्राह्मण वह जो हाथों से काम करें और बुद्धि सदा बाप की याद में रहे अर्थात् कर्मयोगी हो। 3. ब्राह्मण अर्थात् कमल फूल समान। 4. ब्राह्मण अर्थात् सदा आत्म-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करने वाले। 5. ब्राह्मण अर्थात् काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) मन्सा-वाचा-कर्मणा बहुत-बहुत एक्यूरेट बनना है। ब्राह्मण बनकर कोई भी शूद्रों के कर्म नहीं करने हैं।

2) बाबा से जो राय मिलती है उस पर पूरा-पूरा चलकर फरमानबरदार बनना है। कर्मयोगी बन हर कार्य करना है। सर्व की झोली ज्ञान रत्नों से भरनी है।

वरदानः- डबल लाइट बन कर्मातीत अवस्था का अनुभव करने वाले कर्मयोगी भव

जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए, इसके लिए डबल लाइट रहो। डबल लाइट रहने के लिए कर्म करते हुए स्वयं को ट्रस्टी समझो और आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, इन्हीं दो बातों का अटेन्शन रखने से सेकण्ड में कर्मातीत, सेकेण्ड में कर्मयोगी बन जायेंगे। निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बनो फिर कर्मातीत अवस्था का अनुभव करो।

स्लोगनः- जिनकी दिल बड़ी है उनके लिए असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

आपमें जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना, तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि दिल में एक बाप है। एक श्रीमत पर चलने वाले हो। अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है।

''मीठे बच्चे – सुख देने वाले एक बाप को याद करो, इस थोड़े समय में योगबल जमा करो तो अन्त में बहुत काम आयेगा''

प्रश्नः- बेहद के वैरागी बच्चे, तुम्हें कौन-सी स्मृति सदा रहनी चाहिए?

उत्तरः- यह हमारा छी-छी चोला है, इसे छोड़ वापिस घर जाना है – यह स्मृति सदा रहे। बाप और वर्सा याद रहे, दूसरा कुछ भी याद न आये। यह है बेहद का वैराग्य। कर्म करते याद में रहने का ऐसा पुरुषार्थ करना है जो पापों का बोझा सिर से उतर जाये। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाये।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) याद का ऐसा अभ्यास करना है जो बुरे विचार वाले सामने आते ही परिवर्तन हो जाएं। मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई... इस पुरुषार्थ में रहना है।

2) स्वराज्य पाने के लिए शरीर सहित जो कुछ भी है, वह बलिहार जाना है। जब इस रुद्र यज्ञ में सब कुछ स्वाहा करेंगे तब राज्य पद मिलेगा।

वरदानः- सहन शक्ति की विशेषता द्वारा दूसरे के संस्कारों को परिवर्तन करने वाले दृढ़ संकल्पधारी भव

जैसे ब्रह्मा बाप ने ज्ञानी और अज्ञानी आत्माओं द्वारा इन्सल्ट सहन कर उसे परिवर्तन किया तो फॉलो फादर करो, इसके लिए अपने संकल्पों में सिर्फ दृढ़ता को धारण करो। यह नहीं सोचो कि कहाँ तक होगा। सिर्फ थोड़ा पहले लगता है कैसे होगा, कहाँ तक सहन करेंगे। लेकिन अगर आपके लिए कोई कुछ बोलता भी है तो आप चुप रहो, सहन कर लो तो वह भी बदल जायेगा। सिर्फ दिलशिकस्त नहीं बनो।

स्लोगनः- संगम पर सहन कर लेना, झुक जाना, यही सबसे बड़ी महानता है।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

बापदादा चाहते हैं कि बच्चों की पहले साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में एकता हो, फिर एक बल एक भरोसा, एकमत हो तब सेवा में सफलता मिलेगी। जैसे नारियल तोड़कर, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, ऐसे एकमत, एकबल, एक भरोसा और एकता की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है।

''मीठे बच्चे – तुम इस कब्रिस्तान को परिस्तान बना रहे हो, इसलिए तुम्हारा इस पुरानी दुनिया, कब्रिस्तान से पूरा-पूरा वैराग्य चाहिए''

प्रश्नः- बेहद का बाप अपने रुहानी बच्चों का वण्डरफुल सर्वेन्ट है, कैसे?

उत्तरः- बाबा कहते बच्चे मैं तुम्हारा धोबी हूँ, तुम बच्चों के तो क्या सारी दुनिया के छी-छी गन्दे वस्त्र सेकेण्ड में साफ कर देता हूँ। आत्मा रूपी वस्त्र स्वच्छ बनने से शरीर भी शुद्ध मिलता है। ऐसा वण्डरफुल सर्वेन्ट है जो मनमनाभव के छू मन्त्र से सबको सेकेण्ड में साफ कर देता है।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बाप के हर डायरेक्शन पर चलकर स्वयं को कौड़ी से हीरे जैसा बनाना है। एक बाप की याद में रह स्वयं के वस्त्रों को स्वच्छ बनाना है।

2) अब नये घर में चलना है इसलिए इस पुराने घर से बेहद का वैराग्य रखना है। नशा रहे कि इस पुराने कब्रिस्तान पर हम परिस्तान बनायेंगे।

वरदानः- रहम की दृष्टि द्वारा घृणा दृष्टि को समाप्त करने वाले नॉलेजफुल भव

जो बच्चे एक दो के संस्कारों को जानकर संस्कार परिवर्तन की लगन में रहते हैं, कभी यह नहीं सोचते कि यह तो हैं ही ऐसे, उन्हें कहेंगे नॉलेजफुल। वे स्वयं को देखते और निर्विघ्न रहते हैं। उनके संस्कार बाप के समान रहमदिल के होते हैं। रहम की दृष्टि, घृणा दृष्टि को समाप्त कर देती है। ऐसे रहमदिल बच्चे कभी आपस में खिट-खिट नहीं करते। वे सपूत बनकर सबूत देते हैं।

स्लोगनः- सदा परमात्म चिंतन करने वाले ही बेफिक्र बादशाह हैं, उन्हें किसी भी प्रकार की चिंता नहीं हो सकती।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

स्व उन्नति और सेवा की उन्नति दोनों में एक ने कहा, दूसरे ने हाँ जी किया, ऐसे सदा एकता और दृढ़ता से बढ़ते चलो। जैसे दादियों की एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आप रत्नों का भी संगठन पक्का हो, तो संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव।

''मीठे बच्चे – तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो, तुम्हें ज्ञान सूर्य बाप मिला है, अभी तुम जागे हो तो दूसरों को भी जगाओ''

प्रश्नः- अनेक प्रकार के टकराव का कारण तथा उसका निवारण क्या है?

उत्तरः- जब देह-अभिमान में आते हो तो अनेक प्रकार के टकराव होते हैं। माया की ग्रहचारी बैठती है। बाबा कहते देही-अभिमानी बनो, सर्विस में लग जाओ। याद की यात्रा में रहो तो ग्रहचारी मिट जायेगी।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) भारत में सुख-शान्ति की स्थापना करने वा भारत को स्वर्ग बनाने के लिए आपस में सेमीनार करना है, श्रीमत पर भारत की ऐसी सेवा करनी है।

2) सर्विस में उन्नति करने वा सर्विस से ऊंच पद पाने के लिए देही-अभिमानी रहने की मेहनत करनी है। ज्ञान का विचार सागर मंथन करना है।

वरदानः- पवित्रता के आधार पर सुख-शान्ति का अनुभव करने वाले नम्बरवन अधिकारी भव

जो बच्चे ''पवित्रता'' की प्रतिज्ञा को सदा स्मृति में रखते हैं, उन्हें सुख-शान्ति की अनुभूति स्वत: होती है। पवित्रता का अधिकार लेने में नम्बरवन रहना अर्थात् सर्व प्राप्तियों में नम्बरवन बनना इसलिए पवित्रता के फाउण्डेशन को कभी कमजोर नहीं करना तब ही लास्ट सो फास्ट जायेंगे, इसी धर्म में सदा स्थित रहना – कुछ भी हो जाए – चाहे व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे परिस्थिति कितना भी हिलाये, लेकिन धरत परिये धर्म न छोड़िये।

स्लोगनः- व्यर्थ से इनोसेन्ट बनो तो सच्चे-सच्चे सेन्ट बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकॉनमी का अवतार बने। एक दो के विचारों को समझ, सम्मान दे, एक दो को इशारा दे, लेन-देन कर आपस में संगठन की शक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करो क्योंकि आपके संगठन के एकता की शक्ति सारे ब्राह्मण परिवार को संगठन में लाने के निमित्त बनेगी।

''परमात्म संग के रंग की और कम्बाइन्ड स्वरूप की यथार्थ होली मनाओ''

- आज होलीएस्ट बाप अपने होली बच्चों से होली मनाने आये हैं। सबसे बड़े ते बड़ा रंग है परमात्म संग का रंग। तो परमात्म संग का रंग लगने से सहज होली बन गये।
- आप सबने परमात्मा को अपना कम्पैनियन बना लिया, कम्पनी बना लिया इसलिए कम्बाइन्ड हो गये। पुराने संस्कार हैं – अलबेलापन और आलस्य, यह भिन्न-भिन्न रूप में इमर्ज होने से कम्बाइन्ड रूप अलग हो जाता है।
- होली का अर्थ है, हो ली, बीत चुका सो बीत चुका। तो आप सबने पुरानी जीवन, पुरानी बातें, पुराने संस्कार, पुराने व्यर्थ संकल्प को हो ली कर दी ना। परमात्म संग का रंग लगना अर्थात् पुराना जन्म भूल जाना।
- होलीहंस अर्थात् निर्णय शक्ति वाले होली हंस। कोई भी काम करो ना, तो एक सीट फिक्स कर लो, पहले उस सीट पर सेट हो फिर निर्णय करो, वह सीट है त्रिकालदर्शी की सीट।

वरदान:- सर्व आत्माओं के प्रति स्नेह और शुभचिंतक की भावना रखने वाले देहीअभिमानी भव

जैसे महिमा करने वाली आत्मा के प्रति स्नेह की भावना रहती है, ऐसे ही जब कोई शिक्षा का इशारा देता है तो उसमें भी उस आत्मा के प्रति ऐसे ही स्नेह की, शुभचिंतन की भावना रहे – कि यह मेरे लिए बड़े से बड़े शुभचिंतक हैं – ऐसी स्थिति को कहा जाता है देही-अभिमानी। अगर देही-अभिमानी नहीं हैं तो जरूर अभिमान है। अभिमान वाला कभी अपना अपमान सहन नहीं कर सकता।

स्लोगन:- सदा परमात्म प्यार में खोये रहो तो दु:खों की दुनिया भूल जायेगी।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

जब कोई बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिक्र, निश्चिंत रहती है। आपको निश्चय है कि हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी है और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है तो ज़िम्मेवारी उनकी हो जाती है। सभी बोझ बाप के ऊपर रख अपने को हल्का कर दो तो सदा निश्चिंत रहेंगे और हर कार्य एक्यूरेट होगा।